एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ड्रैगन फ्रूट की वैज्ञानिक खेती

(*ओम प्रकाश जीतरवाल[1], केशर मल चौधरी[2] बाबू लाल धायल[1] एवं सुशील[1])
[1]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा
[2]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
संवादी लेखक का ईमेल पता: omprakashjitarwal@gmail.com

ड्रैगन फ्रूट एक प्रकार की बेल पर लगने वाला फल है जिसका वैज्ञानिक नाम *हिलोकेरेस अडटस* है जो केक्टेसिया परिवार से तालुक रखता है इसका तना गूदेदार व रसीला होता इसके फूल बहुत ही सुगन्धित होते है जो कि रात के समय ज्यादा तेजी से बढता है इसलिए इसे ऑफ़ द नाइट के नाम से भी जाना जाता है। इसका उपयोग सलाद, मुरब्बा, जेली बनाकर किया जाता है यह कई प्रकार शारीरिक विकारो से निपटने मे मदद करता है तथा एंटी ऑक्सीडेंट से भरपूर होता है। एस्कॉर्बिक अम्ल व फाइबर भी पाया जाता है। इसमें प्रोटीन की अच्छी मात्रा पायी जाती है।

यह फल मधुमेह रोग, ह्रदय सम्बंधित रोग, कोलेस्ट्रॉल मे, पेट सम्बंधित मे, गठिया रोग, डेंगू रोग, कोसिकाओ की मरमत, भूख बढ़ाने मे, त्वचा सम्बंधित रोगो के लिए तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु सहायक है तथा ड्रैगन फ्रूट के पौधो का उपयोग सजावटी पौधो के रूप मे भी किया जाता है।

जलवायु - ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए शुष्क व अर्द्ध शुष्क जहाँ 50 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा व अच्छी बढ़वार के लिए 20 से 30 सेंटीग्रेड तापमान उचित माना जाता है आर्द्र जलवायु से फलो की गुणवत्ता प्रभावित होती है यह फल वृक्ष तापमान मे होने वाले लगातार परिवर्तनों मे आसानी से जीवित रह सकता है |

मृदा - अच्छी ऊपज लेने के लिए उचित जल निकास वाली जीवांश युक्त बलुई दोमट मृदा अच्छी मानी जाती है जिसका पी एच मान 5.5 से 7 हो उपयुक्त रहता है।

ड्रैगन फ्रूट की महत्वपूर्ण किस्मे- अमेरिकन ब्यूटी, शुगर ड्रैगन, डेज़र्ट किंग, पिंक पेंथर, लिसा, रॉयल रेड, नेचुरल मस्टिक, रेड कन्डोर, डिलाइट, बरुनी, रिक्स फोर्ड, मारिया रोसा, पर्पल हज इत्यादि है |

खेत की तैयारी- पौधो की रोपाई से पहले अच्छी तरह जुताई करके खेत को समतल बनाना चाहिए ताकि अनावश्यक खरपतवार नष्ट हो जाये जुताई के बाद जैविक खाद जैसे गोबर की सड़ी हुई खाद खेत मे अच्छी तरह मिलाना चाहिए।

बुआई की विधि - पहले से तैयार खेत मे 2 x 2 मीटर की दूरी पर 50 x 50 x 50 सेंटीमीटर आकार के गड्ढे मई के माह मे खोदकर 20 दिन के लिए खुला छोड़ दे ताकि हानिकारक कीट व रोगाणु नष्ट हो जाये बाद मे गोबर की खाद व मृदा का 1:1 मिलाकर भर देना चाहिए गड्ढो मे पौधो की रोपाई के बाद मिट्टी के साथ कम्पोस्ट ओर 100 सुपर फोस्फेट भी डालना चाहिए व पौधे रोपने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पोधो को छायादार स्थान पर रखा जाये ताकि सूर्य की तेज रोशनी से नुकसान ना हो पौधे रोपने के बाद

तुरंत सिंचाई करनी चाहिए हो सके तो पोधो को शाम के समय रोपना चाहिए इन पोधो को सहारा प्रदान करने के लिए लकड़ी का तख्त या कंक्रीट लगाना चाहिए।

बुआई का समय - ड्रैगन फ्रूट के पोधो की रोपाई जून - जुलाई माह या फरवरी - मार्च मे करना उचित रहता है ज्यादा बारिश व सर्दी क्षैत्रो क्षैतरो मे सितम्बर या फरवरी - मार्च मे लगाना सही रहता है |

सिंचाई - अन्य फसलों की तुलना मे ड्रैगन फ्रूट को कम पानी की आवश्कता होती है | परन्तु सिंचाई की गर्मियों मे ज्यादा आवश्कता होती 2, 3 दिन से सिंचाई करते रहे व सर्दियों मे 7 दिन से पानी दे व वर्षा ऋतु मे आवश्कता अनुसार पानी देवे | ड्रैगन फ्रूट मे ड्रिप विधि से सिंचाई उपयुक्त रहती है जिसमे पानी व्यर्थ नहीं होता व उपज भी अच्छी प्राप्त होती है

खाद एवं उर्वरक - खाद एवं उर्वरक डालने से पहले यदि मिट्टी की जाँच करवा ले तो आसानी जाती है ड्रैगन फ्रूट के पोधो अच्छी वृद्धि के लिए 15 से 20 किलोग्राम जैविक खाद प्रति पौधा देनी चाहिए इसके बाद प्रत्येक वर्ष 2 किलो जैविक खाद बढ़ाकर देनी चाहिए व इस फल की उचित वृद्धि के लिए रासायनिक खाद की आवश्यकता होती है यूरिया 70 ग्राम सुपर फॉस्फेट 80 ग्राम पोटाश 60 ग्राम फल लगने के समय नत्रजन कम मात्रा व पोटाश अधिक मात्रा में देना चाहिए जिससे फलो की गुणवत्ता व उपज में वृद्धि होती है|

फूल एवं फल लगने का समय - ड्रैगन फ्रूट के पोधो में मई , जून माह में फूल आने लग जाते है अगस्त से दिसंबर माह तक फल तैयार हो जाते है फूल आने के एक माह बाद फल तोड़ने योग्य हो जाते है कच्चे फलो का रंग गहरे हरे रंग का होता है तथा पकने के बाद फलो का रंग लाल हो जाता है जब फल का रंग 70 प्रतिशत तक लाल हो जाये तो तोड़ लेना चाहिए यदि बाजार दूरी पर हो तब थोड़ा सख्त अवस्था मे तोडना अच्छा रहता है ।

उपज - ड्रैगन फ्रूट के पौधे एक साल के अंतर्गत फल देने लग जाते है एक फल का वजन 300 से 800 ग्राम तक हो सकता है एक पोल पर 50 से 120 तक फल लगते है जिनका लगभग वजन 20 से 30 किलोग्राम तक होता है।

कीट एवं बीमारियाँ - ड्रैगन फ्रूट की खासियत है की इसमें कीट व बीमारियों का प्रकोप नहीं होता है।